Result Mitra Daily Magazine

रिलायंस रोसनेफ्ट (Rosneft) से रूसी तेल रूबल में खरीदेगी: रिपोर्ट

चर्चा में क्यों ?

- भारत की रिलायंस इंडस्ट्रीज और रूस की रोसनेफ्ट के बीच एक साल के लिए समझौता

समझौता के बिंदु

- रिलायंस रूबल में रोसनेफ्ट से कच्चा तेल खरीदेगी
- तेल खरीद सीमा - प्रति माह कम से कम 3 मिलियन बैरल तेल

समझौता के पीछे कारण

- रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कुछ समय पूर्व अमेरिकी और अधिकांश यूरोपीय देशों के प्रतिबंधों के बाद अपने व्यापारिक साझेदारों से रूबल में भुगतान का अनुरोध किया था।
- उल्लेखनीय है कि भारत (विश्व का तीसरा सबसे बड़ा तेल आयातक और उपभोक्ता) रूस के 2022 में यूक्रेन पर आक्रमण के बाद पश्चिमी देशों द्वारा खरीद रोक दिए जाने और मॉस्को के खिलाफ प्रतिबंध लगाए जाने के बाद से समुद्री रूसी कच्चे तेल का सबसे बड़ा खरीदार बन गया है।

-

रूस वर्तमान में भारत का पसंदीदा तेल आपूर्ति देश

- भारत ने रूसी कच्चे तेल के लिए इससे पूर्व रुपये, दिरहम और चीनी युआन में भी भुगतान किया है।
- अप्रैल में भारत में आयातित कुल 4.86 मिलियन बीपीडी कच्चे तेल में रूस का हिस्सा 40.3 प्रतिशत था।
- उल्लेखनीय है कि यूक्रेन में युद्ध से पहले , इराक और सऊदी अरब भारत को कच्चे तेल के सबसे बड़े आपूर्तिकर्ता थे।

- लेकिन मास्को द्वारा फरवरी 2022 में यूक्रेन पर आक्रमण के बाद पश्चिमी देशों ने रूसी ऊर्जा आपूर्ति से खुद को अलग करना शुरू किया, तत्पश्चात रूस ने अपने कच्चे तेल पर छूट देना शुरू कर दिया और भारतीय रिफाइनर छूट वाले बैरल को अधिक खरीदने के लिए आकर्षित हुए।
- एक अन्य कारण है कि भारत दुनिया में कच्चे तेल का तीसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता होने के नाते, भारत में आयात पर निर्भरता का स्तर 85 प्रतिशत से अधिक है, इसलिए यह तेल की कीमतों के प्रति बेहद संवेदनशील रहता है।
- कमोडिटी बाजार विश्लेषण फर्म केप्लर के आंकड़ों के अनुसार, भारतीय रिफाइनरों ने अप्रैल में कुल 1.96 मिलियन बैरल प्रति दिन (बीपीडी) रूसी कच्चे तेल का आयात किया, जो पिछले साल जुलाई के बाद से सबसे अधिक है, और मार्च में आयात की गई मात्रा से लगभग 19 प्रतिशत अधिक है।

समझौता से रिलायंस को लाभ

- इस समझौता से निजी तौर पर संचालित रिलायंस को रियायती दरों पर तेल प्राप्त करने में मदद मिलेगी।
- यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि तेल उत्पादकों के ओपेक+ समूह द्वारा चल रही स्वैच्छिक आपूर्ति कटौती को जून से भी आगे बढ़ाने की उम्मीद है।
- ऐसा इसलिए क्योंकि पेट्रोलियम निर्यातक देशों के संगठन (ओपेक) और रूस सहित सहयोगियों वाले ओपेक+ समूह की 2 जून को होने वाली ऑनलाइन बैठक में उत्पादन में कटौती पर विस्तार किया जा सकता है।
- स्वैच्छिक आपूर्ति कटौती से तात्पर्य ओपेक और ओपेक+ समूह देश जो तेल के मुख्य निर्यातक और उत्पादक देश है इसके निर्यात में कटौती करते है , हालाँकि यह बाध्यकारी नहीं होती है।

रूबल मुद्रा

- जैसे भारत की मुद्रा रुपया है वैसे ही रूबल रूस की मुद्रा है।
- वर्तमान में 1 रुसी रूबल की कीमत लगभग 0.93 रुपया के बराबर है।
- **स्थानीय मुद्रा में खरीद से आयातक और निर्यातक को लाभ**
- स्थानीय मुद्रा में माल का भुगतान करने वाले आयातकों को उन आपूर्तिकर्ताओं से लाभ हो सकता है जो खरीदे गए माल पर कम कीमत की पेशकश करते हैं।
- निर्यातकों को आयातक की स्थानीय मुद्रा में चालान जमा करने पर जल्दी भुगतान मिल सकता है.
- ऐसा इसलिए है क्योंकि आयातक के स्थानीय बैंक और अन्य संभावित बिचौलियों को मुद्रा विनिमय प्रक्रिया में शामिल होने की आवश्यकता नहीं होती है। शामिल पक्षों की संख्या कम करके, वित्तीय लेनदेन को तेज़ी से निपटाने की संभावना अधिक होती है।

ओपेक

- ओपेक, 13 प्रमुख तेल उत्पादक देशों (पूर्व में 14 वर्ष 2017 में कतर बाहर) का एक अंतर-सरकारी संगठन है जो एक साथ दुनिया के कच्चे तेल का लगभग 40 प्रतिशत उत्पादन करता है।
- ओपेक तेल निर्यात अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कारोबार किए जाने वाले कुल पेट्रोलियम का लगभग 60 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करता है।
- वर्तमान सदस्य देश - इराक, कुवैत, लीबिया, नाइजीरिया, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, वेनेज़ुएला, अल्जीरिया, अंगोला, कांगो, इक्वेटोरियल गिनी, गैबॉन, ईरान
- मुख्यालय: वियना, ऑस्ट्रिया
- स्थापित - वर्ष 1960 में

Result Mitra

- ओपेक+: वर्ष 2016 में अन्य 10 संबद्ध प्रमुख तेल उत्पादक देशों को शामिल करने के साथ OPEC को OPEC+ के रूप में जाना जाता है।
- OPEC+ देशों में 13 ओपेक सदस्य देश तथा अज़रबैजान, बहरीन, ब्रुनेई, कज़ाखस्तान, मलेशिया, मैक्सिको, ओमान, रूस, दक्षिण सूडान और सूडान शामिल हैं।
- ओपेक और ओपेक+ देशों से भारत का आयात हमारे कुल कच्चे तेल के आयात का 85 प्रतिशत और गैस आयात का 94 प्रतिशत है।

Result Mitra